ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 75 बुलेटिन अवधिः 26–30 सितम्बर, 2018 दिनः मंगलवार दिनाँकः 25 सितम्बर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	26/09/2018	**27/09/2018**	**28/09/2018**	**29/09/2018**	**30/09/2018**
वर्षा (मिमी0)	1	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	31	32	32	32	33
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	21	22	22	21	20
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	80	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	35	35	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	010	008	008	006
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पूर्व	पूर्व–उत्तर–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी पांच दिनो में मौसम के साफ रहने के साथ आसमान में आंशिक से मध्यम बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (18 – 24 सितम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से पूर्णतः बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 26.0 से 33.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 21.5 से 23.7 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 85 से 96 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 67 से 87 प्रतिशत एवं हवा 5.6 से 8.9 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ उर्द एवं मूंग में पीला चित्तवर्ण रोग के प्रकोप में पत्तियॉं पीली पड़ने लगती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसके नियंत्रण हेतु कीटनाशी डाइमिथोएट 30 ई0सी या मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई0सी0 के 1 लीटर/है0 की दर से 500–600 लीटर पानी में मिलाकर 2–3 छिड़काव 10–12 दिन के अंतराल पर करें।
- ❖ धान में भूरा पर्णधब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब का 2.5 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ धान में, जीवाणुज पर्ण अंगमारी हेतु खेत मे खड़े पानी को निकाल दें तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम के मिश्रण को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर /है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ अगर मक्का की खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरपाईरीफॉस 20 ई0सी0 के 5 लीटर/है0 मात्रा को 25–30 किग्रा सूखे बालू में मिलाकर, उचित नमी पर सांयकाल में बुरकाव करना चाहिए।
- ❖ इस समय धान में बाली बनने या बाली निकलने की अवस्था में है और धान की यह अवस्था पानी की कमी के प्रति अति संवेदनशील है तथा इससे बालियों के आकार एवं दानों की संख्या एवं बीज भार में कमी आती है। अतः खेत में पर्याप्त नमी बनायें रखें एवं खेत से पानी अदृश्य होने के एक दो दिन बाद पुनः सिंचाई करें।
- ❖ मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मक्का में पर्णच्छद अंगमारी के नियंत्रण हेतु निचली पत्तियो को हटा दें तथा प्रोपीकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ गाजर व मूली के लिए खेत तैयार करें व माह के अंत तक बुवाई करें। मूली की प्रजातियों पूसा रश्मि, जापानी सफेद, चाइना रोज़, पूसा हिमानी तथा गाजर की प्रजातियों जैसे पूसा केसर, अमेरिकन ब्यूटी, पूसा नैनटिस की बुवाई करें।
- ❖ टमाटर की फसल के लिए पौधशाला का निर्माण कर शीत ऋतु हेतु बीज की बुवाई करें। सामान्य प्रजातियों हेतु 500 ग्राम/है0 व संकर प्रजातियों हेतु 200 से 250 ग्राम/है0 बीज की आवश्यकता है।
- ❖ अगेती आलू के लिए खेत तैयार करें। 200–250 क्विंटल गोबर की सड़ी खाद खेत में मिलाकर माह के अंत तक बुवाई करें। इसके लिए 20–25 क्विंटल बीज प्रति है0 की आवश्यकता होगी।
- ❖ गांठगोभी की पर्पिल वियना और वाईट वियना प्रजातियों की बुवाई करें।
- ❖ टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- ❖ बगीचें में शॉंख गॉंठ का प्रकोप होने पर क्यूनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से प्रयोग करें।
- ❖ जैसा कि आंवले में फल वृद्धि शुरू हो गयी है अतः अच्छी गुणवत्ता के फल हेतु बोरैक्स 200–250 ग्राम प्रति वृक्ष थालों मे प्रयोग करें।
- ❖ इस माह में जाला बनाने वाला टेन्ट कैटरपिलर कीट का भी प्रकोप होता है इसलिए जाला छुड़ाने वाले यंत्र से जाले को साफ करे। एवं प्रभावित प्ररोहो को काटकर कीड़ो सहित जला दे। अगर प्रकोप अधिक हो तो कीटनाशको जैसे 0.2 प्रतिशत कार्बरिल या 0.05 प्रतिशत क्वीनालफॉस का छिड़काव करे।
- ❖ रेडरस्ट तथा एन्थ्रेक्नोज के नियत्रंण हेतू 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (3.0 ग्रा0 प्रति ली0) का छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।

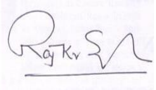

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर